होम्योपैथिक उपचार में सामान्य हिदायतें :

1. इस पत्रिका में निर्देशित औषधियों का उपयोग उसी अवस्था में करना चाहिए जब दिए गए लक्षण रोगी के लक्षणों से मेल खाते हों।
2. औषधि की मात्रा – प्रत्येक तीन घण्टे के बाद 40 नम्बर की 3 गोलियाँ चूस लें अथवा सादे पानी में घोल कर लें।
3. औषधि का सेवन मुँह साफ करके करें और बेहतर होगा कि खाली पेट लें।
4. यदि औषधि सेवन के 24 घंटे की अवधि में आराम आ जाए तो औषधि का सेवन बंद कर दें।
5. यदि औषधि सेवन के बाद 24 घंटे में आराम न आए अथवा लक्षणों में वृद्धि हो तो होम्योपैथिक चिकित्सक की सलाह लें।
6. औषधियों को तेज गन्ध वाली वस्तुओं जैसे कपूर तथा मेंथाल इत्यादि से दूर रखें।
7. औषधियों को ठंडे एवं शुष्क स्थान पर रखें और धूप एवं गर्मी से दूर रखें।
8. औषधियों को बच्चों की पहुँच से दूर रखें।

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
(भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के अधीन गठित स्वशासी निकाय)
जवाहर लाल नेहरू भारतीय चिकित्सा एवं होम्योपैथिक अनुसंधान भवन,
61–65 संस्थागत क्षेत्र, डी–ब्लॉक के सामने, जनकपुरी, नई दिल्ली–110058
फोनः 91–11–28521162, 91–11–28525523 फैक्सः 91–11–28521060
ईमेल : ccrh@del3.vsnl.net.in वेबसाइट : www.ccrhindia.org

होम्योपैथी द्वारा
मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य रक्षा हेतु
राष्ट्रीय अभियान

बच्चों में साईनुसाईटिस का होम्योपैथिक उपचार

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध एवं होम्योपैथी चिकित्सा विभाग (आयुष)
स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय
भारत सरकार

केन्द्रीय होम्योपैथिक अनुसंधान परिषद्
(भारत सरकार, स्वास्थ्य एवं
परिवार कल्याण मंत्रालय
के अधीन गठित स्वशासी निकाय)

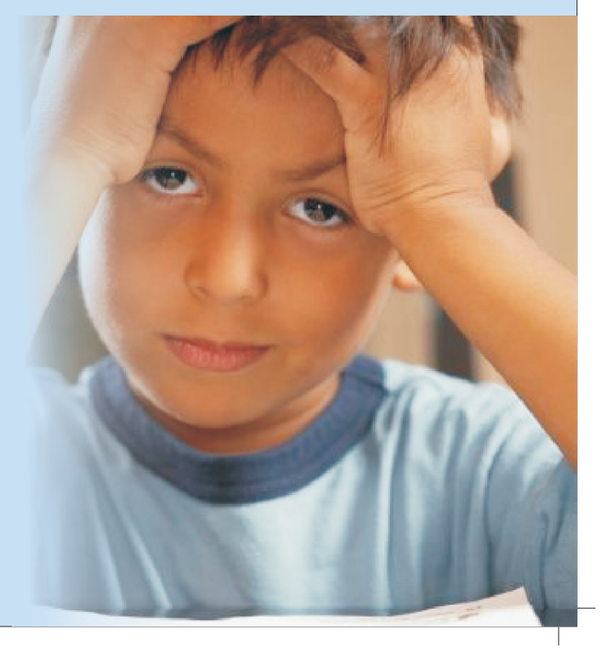

बच्चों में साईनुसाईटिस

नासिका के साथ वायु से भरे कक्ष को साईनस कहते हैं, जो वायु को फिल्टर करते हैं और वायु के तापमान और आद्रता को कायम रखते हैं। साईनस के संक्रमण को साईनुसाईटिस कहते है।

कारण एवं चिन्ह :

उत्तेजक पदार्थ जैसे तेज भाप, वायु प्रदूषण और धूल इत्यादि से ऐलर्जी।

नाक, मुंह, दांत, गला या टॉन्सिल से संक्रमण प्रसार।

लक्षण :

भिन्न–भिन्न साईनस के संक्रमण के लक्षण भिन्न–भिन्न हो सकते हैं।
मस्तक एवं आंखों के ऊपरी हिस्से में दर्द या भारीपन एवं स्पर्श के प्रति संवेदन शीलता।
नाक के पीछे से गले में बलगम का गिरना।
बंद नाक के साथ प्रत्यावर्ती (बार–बार) खांसी एवं जुकाम।

अगर इसका ठीक से इलाज न हो तो यह पुरानी साईनुसाईटिस में परिवर्तित हो सकता है।

क्या करें क्या न करें :

भाप लें।
धूल और धुंए से बचें।
पर्याप्त आराम करें।
गर्म पेयों जैसे सूप, दूध, चाय इत्यादि का सेवन करें।

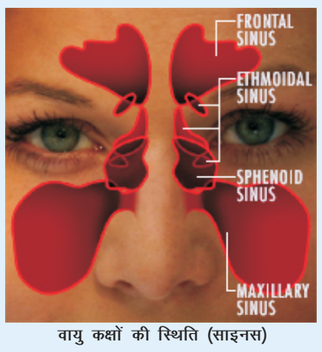

वायु कक्षों की स्थिति (साइनस)

होम्योपैथी क्या कर सकती है?

इन विकारों में प्रयोग होने वाली होम्योपैथिक औषधियाँ निम्न हैं, लेकिन **इनके प्रयोग से पहले योग्य होम्योपैथिक चिकित्सक से परामर्श अवश्य करें ।**

लक्षण	औषधि
लक्षणों का सर्दियों में बढ़ना। सिर हिलाने से सिर में दर्द होना। नाक बंद होना, विशेशरूप से ठंडी हवा में जाने पर। नाक से गाढ़ा एवं बदबूदार स्त्राव। बच्चे का ठंडी वायु के प्रति संवेदनशील होना।	*हिपर सल्फ्यूरिकम 30*
नाक से गाढ़ा चिपचिपा, हरा–पीला स्त्राव। मस्तक एवं नाक की मूल में दर्द। नाक बंद महसूस करना।	*काली बाईक्रोमिकम 30*
आंखों के ऊपर या सिर के शीर्श भाग में दर्द। सिरदर्द का धूप में बढ़ना और दबाने और ढकने से आराम मिलना। बंद नाक का गर्म कमरे में बढ़ना। मरीज़ का चिड़चिड़ा और अति संवेदनशील होना। प्रकाश, गंध और शोर का बर्दाश्त न होना।	*नक्स वॉमिका 30*
सिर के दांए भाग में दर्द या दांयी आंख के ऊपर दर्द होना। दर्द का धूप में बढ़ना खासतौर से सूर्योदय और सूर्यास्त के मध्य। दर्द में लेटने और सोने से आराम मिलना। आंखों में जलन का एहसास और गालों में लालिमा।	*सेन्गुनेरिया कैनाडैन्सिस 30*

पीछे दिए गये पृष्ठ पर निर्देशों का पालन करें